SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

जैन धर्म का शिक्षा में दार्शनिक प्रभाव

खुशबू दीवान, Ph.D., शिक्षा विभाग
पं. हरिशंकर शुक्ल स्मृति महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
खुशबू दीवान, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/12/2023
Revised on : -----
Accepted on : 16/12/2023
Plagiarism : 02% on 09/12/2023

शोध सार

जैन धर्म प्राचीन दर्शन है जिसने मनुष्य के मन मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है यहां तक कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली के तहत, छात्र और छात्राये अपने पाठ्यक्रम का पालन करने के लिए स्कूलों और कॉलेजों में जाते हैं पर शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों हो सकता है। किसी व्यक्ति की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो शारीरिक, और मानसिक विकास में सहायक हो। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के नैतिक पहलू इस प्रकार कह सकते है कि शिक्षा का उद्देश्य किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास तक ही सीमित नहीं है; वरन यह 'संपूर्ण गुण संपन्न मनुष्य' विकसित करने का प्रयास करता है। जैन धर्म शिक्षा और जीवन के उद्देश्य को समान पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है। शिक्षा के उद्देश्य जीवन के लक्ष्यों से प्रभावित होती है। शिक्षा जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति का महत्वपूर्ण साधन है। जैन धर्म में काफी अच्छा दर्शन है और शिक्षा के स्थायी उद्देश्य प्रदान करता है। जैन धर्म न केवल सांसारिक सुखों और आत्मीय सुखों को प्राप्त करने का एक वास्तविक स्रोत है, बल्कि पूर्णता, सर्वज्ञता और शाश्वत अनंत खुशी प्राप्त करने के लिए सांसारिक आत्मा को शुद्ध करने का एक विज्ञान भी है। यह न सिर्फ मानव जाति की, बल्कि पशु ,पक्षियों और श्रेष्ठों की भी मौलिक,स्वतंत्र, वैज्ञानिक, सार्वभौमिक, व्यवस्थित और आदिम आस्था है। यह स्वतंत्रता, शुद्ध आनंद,आत्म–जिम्मेदारी, आत्म–बोध,पारस्परिक सहयोग, आध्यात्मिक उन्नति, सभी को अच्छे विचार, मधुर स्वभाव, सादा जीवन, शुद्ध भोजन, संतोष, शांति, प्राप्त करने हेतु अनुकरणीय साधन है।

मुख्य शब्द

जैन धर्म, दर्शन, प्रभाव, पहलू, सार्वभौमिक शिक्षा.

शिक्षा

जैन धर्म बहुत प्राचीन दर्शन है। इसने मनुष्य के मन मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है। आज भी जब लोग किसी पुराने दर्शन को मानने को तैयार नहीं हैं तब जैन धर्म में कुछ आकर्षण हैं जो मानव मन को आकर्षित करती हैं और मानव सोच पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जैन धर्म ने शिक्षा के महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रभावित किया है। यह शिक्षा के अच्छे आदर्श और उद्देश्य प्रदान करता है वर्तमान शिक्षा प्रणाली के तहत, छात्र और छात्राएं अपने लिए निर्धारित पाठ्यक्रम का पालन हेतु स्कूलों और कॉलेजों जाते हैं। शिक्षक निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर पाठ तैयार करते हैं और विद्यार्थियों को उनके द्वारा एकत्रित की गई सभी जानकारी से अवगत कराते हैं। कई बार, जो ज्ञान दिया जाता है वह अनुभव पर आधारित होती है समझ के आधार पर नहीं होता है। परिणामस्वरूप छात्र कुछ नए तथ्य सीखते हैं सिर्फ परीक्षा उत्तीर्ण करने के उद्देश्य नहीं होना चाहिए जबकि अधिग्रहण शिक्षा का अधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। मनुष्य ने ज्ञान के क्षेत्र का विस्तार करके अपने लिए नए क्षितिज बनाए हैं। जिन लोगों ने इस क्षितिज को व्यापक बनाने में योगदान दिया वे चरित्रवान और मजबूत व्यक्ति थे, ऐसे व्यक्ति जो किसी भी बाधाओं और कठिनाइयों का सामना कर सकते थे, और जिस आदर्श के लिए वे जीते थे, उसके लिए खतरों का जोखिम भी उठा सकते थे और कष्ट सह सकते थे। समस्त शिक्षा का उद्देश्य ऐसे मनुष्य बनाना होना चाहिए जिसमे शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक और व्यक्तिगत भी हो। किसी व्यक्ति की शिक्षा के दृष्टिकोण से, यह ऐसी होनी चाहिए जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के शारीरिक, मानसिक और नैतिक पहलुओं को विकसित करने में मदद करे और दूसरी ओर, शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य यह है कि वह व्यक्ति को एक खुशहाल और समृद्ध समाज के निर्माण के लिए तैयार करे। इस बात को ध्यान में रखते हुए की शिक्षा व्यक्ति केंद्रित है, लेकिन अंतिम उपाय में, व्यक्ति उस समाज की एक घटक इकाई है जिसका वह संबंध रखता है। इसलिए, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के निर्माण के माध्यम से समाज का भी निर्माण करना है।

जैन धर्म और शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा जीवन के लिए बहुत आवश्यक है जिसे पूर्व और पश्चिम के विचारकों द्वारा स्वीकार किया गया है, यह ब्रह्मांड की एक सुसंगत तस्वीर है जिसके माध्यम से ज्ञान की विभिन्न वस्तुओं का एक परिप्रेक्ष्य, एक सारांश दृष्टि, एक समन्वय प्राप्त होता है ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के बीच शिक्षा के माध्यम से हमें सद्भाव स्थापित करना होगा। प्राचीन भारत में भी शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान की व्यवस्थित वृद्धि के साथ व्यक्ति में ज्ञान का विकास करना था। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य एकतरफ़ा विकास तक ही सीमित नहीं है वरन व्यक्ति का व्यक्तित्व के साथ 'संपूर्ण मनुष्य' विकसित करने का प्रयास था। वर्तमान परिस्थितियों में, हमारी शिक्षा प्रणाली को अपना मार्गदर्शक सिद्धांत उस सामाजिक व्यवस्था के उद्देश्य में खोजना चाहिए जिसके लिए वह तैयारी करती है, उस सभ्यता की प्रकृति में जिसे वह बनाने की आशा करती है। जब तक हम नहीं जानते कि हम यह तय नहीं कर सकते कि हमें क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए। यह समाज को, आश्चर्यजनक परिवर्तनों की दुनिया में स्थिर रखने के लिए एक स्पष्ट उद्देश्य की आवश्यकता होती है। जैन धर्म शिक्षा और जीवन के उद्देश्य के लिए समान पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है। शिक्षा के उद्देश्य जीवन के लक्ष्यों से प्रभावित होंगे शिक्षा जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति का महत्वपूर्ण साधन है। हमने देखा है कि जैन धर्म के अनुसार व्यक्ति और मनुष्य की आत्मा अधिक महत्वपूर्ण है उसकी शारीरिक संरचना की तुलना में मनुष्य वास्तव में एक आत्मा है सम्पूर्ण सृष्टि संकल्पनात्मक है। प्रकृति अपने आप में अधूरी है। इसके पीछे ब्रह्मांड. मनुष्य की आत्मा ब्रह्मांड की इस आत्मा का एक हिस्सा है। इसकी वास्तविक संरचना शानदार है. इसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाया हुआ हो सकता है। जैन धर्म के अनुसार मानव जीवन का उद्देश्य इस आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना है, इसलिए, जैन धर्म के अनुसार आत्म–साक्षात्कार को शिक्षा के उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया गया है। यह याद रखना होगा कि यह आत्मा केवल एक शरीर नहीं है। दार्शनिक आत्म मनोवैज्ञानिक आत्म से भिन्न है। मनोवैज्ञानिक आत्म स्वयं के बारे में चेतना है। मनोवैज्ञानिक रूप से कहें तो, सबसे पहले, हमें अपने शरीर और कपड़ों के दृश्य भागों की दृश्य धारणा होती है और बाद में दृश्य, सामरिक और अन्य संवेदनाएं छवियों या विचारों के साथ मिश्रित होती हैं। इस प्रकार, हमारे पास कथित स्वयं की चेतना है। साथ–साथ, हम स्वयं के बारे में, बोधक के बारे

में विचार विकसित करते जाते हैं। इस स्तर पर हम स्वयं के दार्शनिक चिंतन में प्रवेश करते हैं। यह वह आत्मा है जिसे स्वयं को साकार करना है व्यक्तियों. यहाँ 'स्व' का अर्थ मनुष्य का वास्तविक स्वरूप है इसीलिए यहाँ 'आत्म' शब्द का प्रयोग किया गया है। मनुष्य को इस वास्तविक स्वरूप का बोध करना होगा। शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को आत्म एहसास कराने में सक्षम बनाना है; उसके वास्तविक स्वरूप को पहचानें और आत्मज्ञान की ओर बढ़ सके।

जैसा कि हम जैन धर्म में पहले ही देख चुके हैं कि मनुष्य ईश्वर की सबसे भव्य कृति है। शेक्सपियर के शब्दों में, मनुष्य 'सृष्टि का प्रतीक' है। उसके अंदर एक व्यक्तित्व, स्वयं का एक पैटर्न, जन्मजात होता है। शिक्षा को इस पैटर्न को परिपूर्ण बनाना चाहिए। जैन धर्म ने हमें शिक्षा के बहुत ऊंचे लक्ष्य दिए हैं। जैन धर्म द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्य इस प्रकार हैं:

1. **आत्मबोध या व्यक्तित्व का उत्कर्ष:** जैन धर्म मनुष्य के व्यक्तित्व और आध्यात्मिक प्रकृति के कार्य पर जोर देता है। मनुष्य की आत्मा उसकी भौतिक संरचना से अधिक महत्वपूर्ण है। मनुष्य मात्र आत्मा है, संपूर्ण सृष्टि वैचारिक है। प्रकृति अपने आप में अधूरी है। मनुष्य की आत्मा इस ब्रह्मांड का एक हिस्सा है। आत्मा की वास्तविक संरचना भव्य है। जैन धर्म के अनुसार मानव जीवन का उद्देश्य अपनी आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना है इसलिए, जैन धर्म के अनुसार आत्म–साक्षात्कार को शिक्षा के उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया गया है। यहाँ 'स्व' शब्द का प्रयोग मनुष्य के वास्तविक स्वरूप 'आत्मा' के लिए किया गया है। शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को आत्म एहसास कराने में सक्षम बनाना है जिससे वह अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानें और आत्मज्ञान की ओर बढ़ें। जगत् में आत्म ज्ञान भी ज़रूरी है। ब्रह्माण्ड में आत्मा ही अंतिम सत्य है यह अच्छा और सुंदर है. यह उस परम सत्य की अनुभूति है जो आनंद दे सकती है। यही बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास का उद्देश्य है।
2. **सार्वभौमिक शिक्षा:** जैन धर्म का मानना है कि प्रत्येक मनुष्य समान रूप से ईश्वर का सर्वोत्तम कृति है इसलिए, बच्चों की शिक्षा में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। शिक्षा सार्वभौमिक होनी चाहिए वो भी बिना धन, स्थिति, पंथ, जाति या रंग के भेदभाव के। यह कुछ पसंदीदा लोगों के बीच सीमित नहीं होना चाहिए। सार्वभौमिक शिक्षा का जैन धर्म समर्थन करता है।
3. **सांस्कृतिक पर्यावरण का संरक्षण और संवर्धन:** सांस्कृतिक पर्यावरण का संरक्षण और संवर्धन जैन धर्म के लिए आवश्यक कार्यो में से एक है, आध्यात्मिक या सांस्कृतिक वातावरण मनुष्य का स्वयं का बनाया हुआ वातावरण है। यह मनुष्य की अपनी रचनात्मक गतिविधियों का फल है। यह युगों का उत्पाद है और यह हमेशा विकास की प्रक्रिया में रहता है। यह सभी की है और यह मानव जाति की साझी विरासत है। शिक्षा का उद्देश्य अपनी सर्वोत्तम क्षमता से इस सांस्कृतिक विरासत में प्रवेश करना, इसे संरक्षित करना और इसमें सुधार करना है।
4. **नैतिक भावना का विकास:** जैन धर्म के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बच्चे की नैतिक भावना और समझ विकसित करना है और इस प्रकार उसे सही–गलत में अंतर करने, अच्छाई से प्यार करने और बुराई से घृणा करने हेतु सक्षम बनाना है। जीवन और शिक्षा का लक्ष्य बच्चे के आध्यात्मिक चरित्र का विकास करके नैतिक मूल्यों की प्राप्ति होना चाहिए जिसे जैन धर्म शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करता है।
5. **आविष्कारशील एवं सजनात्मक शक्तियों का विकास:** जैन धर्म शिक्षण के अनुसार मनुष्य अन्य प्राणियों की भाँति असहाय नहीं है। उसे कुछ आविष्कारशील और रचनात्मक शक्तियाँ जन्मजात मिली हुई होती हैं जिसे उचित माधयम से विकसित करने की आवश्यकता होती है मनुष्य 'अद्वितीय' है। उसे अपनी आविष्कारशील और रचनात्मक शक्तियों का विकास करना होगा। इन आविष्कारशील और रचनात्मक कौशल के माध्यम से, उसे अपनी आवश्यकताओं और उद्देश्यों के अनुसार पर्यावरण को बदलना और संशोधित करना चाहिए।
6. **सम्पूर्ण मनुष्य का विकास:** जैन धर्म शिक्षण में आदर्शवादी दर्शनशास्त्र द्वारा शिक्षा के भौतिक पहलू पर भी विचार किया गया है।क्योंकि ऐसे स्वास्थ्य और फिटनेस के बिना आध्यात्मिक मूल्यों की खोज नहीं की

जा सकती नैतिक मूल्य, जो आध्यात्मिक हैं, भौतिक गतिविधियों में पाए जा सकते हैं, बौद्धिक मूल्य भौतिक पर्यावरण की समस्याओं के लिए कौशल के अनुप्रयोग में संरक्षित होते हैं। जैन धर्म के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को पूर्ण शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक उत्थान के साथ एक पूर्ण मनुष्य बनाना होना चाहिए। शारीरिक रूप से वह हृष्ट–पुष्ट होना चाहिए; बौद्धिक रूप से उसे एक दार्शनिक और वैज्ञानिक की तरह सचेत और सोचना चाहिए, नैतिक रूप से उसमें अच्छाई का पालन करने और बुराई से बचने का दृढ़ संकल्प होना चाहिए। आध्यात्मिक रूप से उसे मन की स्वतंत्रता, अज्ञानता, चाहतों और जुनून से मुक्ति मिलनी चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य सम्पूर्ण मनुष्य को मनुष्यत्व के लिए प्रशिक्षित करना होना चाहिए।

7. **सादा जीवन और उच्च विचार:** जैन धर्म मानता है कि सादा जीवन और उच्च विचार शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। मनुष्य को मन को नियंत्रित करने की आवश्यकता है इसलिए अपने तृष्णा में नियत्रित करके सात्विक जीवन जीकर अपने विचारो और ज्ञान में निरंतर वृद्धि करनी चाहिए जिससे ज्ञान प्राप्त कर समाज निर्माण में भी योगदान दे सके।

जैन धर्म के अनुसार पाठ्यक्रम

सभी अध्धयन के बाद यह प्रश्न यह उठता है कि उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जैन धर्म के अनुसार पाठ्यक्रम का स्वरूप क्या होना चाहिए? विद्यार्थी जिस प्रकार के वातावरण में जन्म लेता है उसी प्रकार के वातावरण में रहने का आदी हो जाता है। यह निश्चित है कि पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय हम इस वातावरण की उपेक्षा नहीं कर सकते। उन गतिविधियों के लिए पाठ्यक्रम में कुछ स्थान आवंटित करना संभव है जिन्हें पूरी तरह से सच नहीं कहा जा सकता है। जैन धर्म इसे सत्य की झलक नहीं मानता। जैन हमें सलाह देते हैं कि हमें इस भौतिक संसार में इसके साथ अंतिम सत्य को प्राप्त करना चाहिए। मनुष्य का आध्यात्मिक वातावरण अधिक महत्वपूर्ण है लेकिन प्राकृतिक पर्यावरण की उपेक्षा नहीं की जा सकती। मनुष्य शरीर और मन का एक संयोजन है, जिनमें से बाद वाला अधिक महत्वपूर्ण है। लेकिन यदि शारीरिक आवश्यकताएं पूरी नहीं होती हैं तो मानसिक गतिविधि भी कठिन होगी। मनुष्य आत्म–प्राप्ति की ओर तभी आगे बढ़ सकता है, जब वह अपनी भौतिक आवश्यकताओं पर नियंत्रण रखेगा। अतः भौतिक जगत का ज्ञान भी आवश्यक है। विद्यार्थी को प्राकृतिक पर्यावरण का ज्ञान होना चाहिए साथ ही आध्यात्मिक वातावरण पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

जैन धर्म के अनुसार बौद्धिकता

जैन धर्म के अनुसार आध्यात्मिक वातावरण में सैद्धांतिक, नैतिक और धार्मिक गतिविधियाँ शामिल होती हैं। उनका ज्ञान, नैतिकता और धर्म इस आध्यात्मिक वातावरण के अंतर्गत आते हैं। समाज को प्राकृतिक और आध्यात्मिक दोनों आवश्यकताएँ होती हैं। मनुष्य प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित होता है कला, धर्म और नैतिकता का विकास करके आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण करता है। स्वयं को स्थिर करने के लिए समाज चाहता है कि उसके भावी सदस्य प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक विषयों का ज्ञान प्राप्त करें। वह नहीं चाहता कि समाज के सभी व्यक्ति एक जैसे हों इसलिए व्यक्ति और समाज दोनों के दृष्टिकोण से प्राकृतिक और आध्यात्मिक वातावरण का ज्ञान पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। मनुष्य दोनों प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करके ही स्वयं को साकार कर सकता है। इस दृष्टिकोण से जैन धर्म शारीरिक प्रशिक्षण की उपेक्षा नहीं करता इसके पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा भी शामिल होगी। प्राकृतिक पर्यावरण का ज्ञान प्राकृतिक विज्ञान के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, इसलिए जैन धर्म भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, भूगोल, खगोल विज्ञान, भूविज्ञान, वनस्पति विज्ञान और प्राणीशास्त्र जैसे विषयों की निंदा नहीं करता है। आध्यात्मिक विकास के लिए कला, साहित्य, नीतिशास्त्र, दर्शन, धर्म, मनोविज्ञान और संगीत जैसे विषय अधिक महत्वपूर्ण हैं। इन विषयों के अध्ययन से मनुष्य की आत्मा का विकास होता है। इन विषयों के अध्ययन के बिना मनुष्य प्राकृतिक वातावरण तक ही सीमित रहेगा और संगीत अधिक महत्वपूर्ण है। इन विषयों के अध्ययन से मनुष्य की आत्मा का विकास होता है। इन विषयों के अध्ययन के बिना मनुष्य प्राकृतिक वातावरण तक ही सीमित रहेगा और उसका संपूर्ण बौद्धिकता का विकास नहीं हो पायेगा।

जैन धर्म शिक्षा में शिक्षा तरीके

हमारे स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाने के तरीकों पर बहुत कुछ लिखा गया है। गतिविधि पद्धति, परियोजना पद्धति, व्यक्तिगत ध्यान, शिक्षण को विद्यार्थियों के अनुभवों से जोड़ना, सिनेमा, नाटक, रेडियो और टेलीविजन जैसे दृश्य–श्रव्य साधनों का उपयोग और इसी तरह के विभिन्न उपकरणों की सिफारिश प्रख्यात शिक्षकों और शिक्षाविदों द्वारा की गई है। इन सभी विधियों का उपयोग करने का मूल उद्देश्य छात्र में रुचि पैदा करना है, ताकि वह अपने अध्ययन के विषय पर अपना ध्यान केंद्रित कर सके। लेकिन व्यवहार में, कई मामलों में इस मूल उद्देश्य को भुला दिया गया है और इन तरीकों को ही उद्देश्यों के रूप में अपना लिया गया है। लेकिन जैन धर्म तरीकों को उपकरण के रूप में लेता है न कि अपने आप में समाप्त हो जाता है। जैन धर्म शिक्षा के ऊंचे लक्ष्य प्रदान करता है लेकिन शिक्षण के तरीकों के बारे में बहुत कम बात करता है। यह शिक्षण की एक विधि की वकालत करता है जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, जिसे एकाग्रता कहा जाता है। शिक्षा का सार ही मन की एकाग्रता है। आम व्यक्ति से लेकर उच्चतम योगी तक, सभी को ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक ही विधि का उपयोग करना पड़ता है। रसायनज्ञ जो अपनी प्रयोगशाला में काम करता है वह अपने मन की सभी शक्तियों को केंद्रित करता है, उन्हें एक फोकस में लाता है, और उन्हें तत्वों पर फेंक देता है; तत्वों का विश्लेषण किया जाता है, और इस प्रकार उसका ज्ञान आता है। किसी भी कार्य क्षेत्र में सारी सफलता इसी का परिणाम है। कला, संगीत आदि में उच्च उपलब्धियाँ एकाग्रता का परिणाम हैं जब मन एकाग्र हो जाता है और अपनी ओर लौट जाता है, तो हमारे भीतर सभी हमारे सेवक होंगे, हमारे स्वामी नहीं। जैन धर्म के अनुसार एकाग्रता की शक्ति ही ज्ञान के खजाने की एकमात्र कुंजी है। यह इस बात की वकालत करता है कि शिक्षा का सार मन की एकाग्रता है न कि तथ्यों का संग्रह। मन की एकाग्रता उन वैज्ञानिकों की शक्ति के स्रोत का रहस्य है जो बाहरी दुनिया की जांच करते हैं, या भविष्यवक्ता जो आत्मा की आंतरिक दुनिया की जांच करते हैं। दिमाग को कुछ तथ्यों और आंकड़ों से भर देना शिक्षा नहीं है। बच्चे के व्यक्तित्व का विकास, ताकि प्रत्येक लड़का और लड़की अपनी प्रतिभा के अनुसार अपने जीवन में उच्चतम स्तर तक पहुँच सकें, सभी शिक्षा का अंत है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम उस प्राप्ति के प्रत्येक साधन और साधन को विकसित करें। शिक्षा के मूल सिद्धांतों में से एक जिसका जैन धर्म पालन करता है वह है प्रत्येक व्यक्ति में सर्वश्रेष्ठ देखना। इसका मानना है कि किसी व्यक्ति के मजबूत बिंदुओं को देखना और उन पर जोर देना उस व्यक्ति के निर्माण का सबसे अच्छा तरीका है इसलिए, जैन धर्म सभी नकारात्मक दृष्टिकोणों और अभिव्यक्तियों के खिलाफ है। आध्यात्मिक गुणों को दैनिक जीवन में अपनाना चाहिए। धर्म तब तक कुछ नहीं है जब तक उसका आचरण न किया जाए। प्रेम, पवित्रता और निस्वार्थ सेवा जैसे गुण हमारी आज की गतिविधियों का हिस्सा बनने चाहिए। शैक्षिक प्रणाली को ऐसी गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए और प्रदान करनी चाहिए जो ऐसे गुणों को विकसित करें। दुनिया भर में शिक्षा के प्रगतिशील तरीकों का उद्देश्य बच्चों को निष्क्रिय प्राप्तकर्ता बनने के बजाय सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाना है। इसी दृष्टि से विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ तैयार की गई हैं। जैन धर्म ने सुझाव दिया है कि हमारे दैनिक कर्तव्य स्कूल और घर में सीखने की गतिविधियों को डिजाइन करने का आधार बन सकते हैं।

जैन धर्म के अनुसार शिक्षक की भूमिका

जैन धर्म के अनुसार शिक्षक से उच्च गुणों की अपेक्षा की जाती है शिक्षा पर आधुनिक पुस्तकों में कुछ विशिष्ट गुणों का वर्णन किया गया है जो एक शिक्षक को अपने पेशे में सफल होने के लिए होने चाहिए। उसे अपने विषय का अच्छी तरह से ज्ञान होना चाहिए, उसे प्रभावी ढंग से पढ़ाना आना चाहिए और उसे अपने विद्यार्थियों के प्रति सच्चा प्यार होना चाहिए। यह संकेत करता है अपने ज्ञान के क्षेत्र में अद्यतन रहने के लिए उसे लगातार सीखते रहना चाहिए। उसे अपने शिष्यों से भी प्रेम करना चाहिए और उनके प्रति समर्पित रहना चाहिए। प्रेम के बिना कोई भी अपने विद्यार्थियों को अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे सकता। प्यार, स्नेह और सम्मान के माध्यम से ही शिक्षक विद्यार्थियों की जरूरतों और उन्हें पूरा करने के तरीकों को समझ सकता है। इसके अलावा, एक अच्छे शिक्षक के पास अच्छी याददाश्त, व्यक्तित्व, दृढ़ संकल्प, इच्छा शक्ति होनी चाहिए साथ ही युवाओं की प्रेरक क्षमता, चातुर्य और तौर–तरीकों की समझ भी होनी चाहिए। इन सभी को जैन धर्म में और हमारी प्राचीन पुस्तकों में भी एक शिक्षक के आवश्यक

गुणों के रूप में निर्धारित किया गया है। इसके अलावा जैन धर्म इस बात की वकालत करता है कि शिक्षक को अपने शब्दों का एक अच्छा उदाहरण होना चाहिए। उसे अपने दैनिक जीवन में वही जीना चाहिए जो वह उपदेश देता है। अपने विद्यार्थियों के साथ संबंधों के संबंध में शिक्षक के लिए नियम निर्धारित करने वाले भी नियम थे। शिक्षक को विद्यार्थियों से अपने पुत्र के समान प्रेम करना चाहिए। उसे पूरे मन से पूरे मन से पवित्र विज्ञान सिखाना चाहिए, पूरे कानून का कोई भी हिस्सा उससे छीने बिना। उन्हें विद्यार्थियों को अज्ञानता के अंधकार से शिक्षा के प्रकाश की ओर ले जाने वाला बताया गया है। जो शिक्षक अपने शिष्य के निर्देशों की उपेक्षा करता है, वह उसका शिक्षक नहीं रह जाता है। जबकि छात्र को हर संभव तरीके से शिक्षक की सेवा करनी चाहिए, यह शिक्षक का दायित्व है कि वह उसे ऐसा कोई काम न दे जिससे उसकी पढ़ाई में बाधा उत्पन्न हो। यद्यपि शिक्षक को सेवाएं प्रदान करना छात्र का कर्तव्य है। शिक्षक को यह देखने के लिए सावधान रहना चाहिए कि छात्र का उसकी पढ़ाई को नुकसान पहुंचाने वाले स्वार्थी उद्देश्यों के लिए शोषण न किया जाए। ऐसी सेवाएँ हैं इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के स्वयं के नैतिक सुधार के लिए है न कि केवल आर्थिक लाभ के लिए शिक्षा की सबसे अच्छी योजना ख़राब हो सकती है, यदि उसे संभालने वाले शिक्षक ख़राब हों। किसी भी शैक्षिक प्रणाली की गुणवत्ता काफी हद तक सुशिक्षित और सुसज्जित, सीखने में निपुण, मजबूत चरित्र वाले, उच्च आदर्शों वाले और ज्ञान के प्रसार के लिए समर्पित शिक्षकों पर निर्भर करती है। यदि भारत तीर्थयात्रा और शिक्षा का एक महान केंद्र था और दूर–दराज के देशों से लोग भारी कठिनाइयों का सामना करते हुए उसके पास आते थे, तो इसका कारण यह था कि वहां ऐसे स्वामी थे जो ज्ञान और सत्य की खोज को अपने जीवन में सबसे बड़ी चीज मानते थे। वे न केवल बौद्धिक रूप से प्रतिष्ठित थे, बल्कि आध्यात्मिक दीपक भी थे, जिन्होंने दूसरों की आत्मा में प्रकाश जलाया जैन धर्म के अनुसार शिक्षक को अपनी पूरी ताकत सिखाए जाने की प्रवृत्ति में लगानी चाहिए, वास्तविक सहानुभूति के बिना हम कभी भी अच्छी तरह से नहीं पढ़ा सकते। किसी भी व्यक्ति की आस्था को ठेस लगाने का प्रयास न करें। यदि आप कर सकते हैं, तो उसे कुछ बेहतर दें, लेकिन जो उसके पास है उसे नष्ट न करें। सच्चा शिक्षक वह है जो तुरंत छात्र के स्तर पर आ सकता है, और अपनी आत्मा को छात्र की आत्मा में स्थानांतरित कर सकता है और उसके दिमाग के माध्यम से देख और समझ सकता है। ऐसा शिक्षक वास्तव में पढ़ा सकता है। जैन धर्म का मानना है कि वाणी के माध्यम से शिक्षण, जहां अनुप्रयोग का अभाव है, प्रभावी नहीं होगा। जब मनुष्य तीव्रता से अनुभव करता है तो उसके शब्द कम होते हैं, मौन उदाहरण ही शिक्षा का सर्वोत्तम उपाय है। वाणी अपना प्रभाव ख़राब कर देती है। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी बच्चे को थप्पड़ मारते हैं, तो वह सबसे पहले आपका चेहरा देखेगा। यदि आपके चेहरे पर क्रोध का भाव है तो बच्चा रोना शुरू कर देगा, लेकिन यदि वह आपको मुस्कुराता हुआ पाता है, तो वह इसे बुरा नहीं मानेगा और मुस्कुरा देगा, क्योंकि चेहरे के भाव की मूक भाषा को चुपचाप समझा जा सकता है। चेहरा हमारे दिल का सूचक है. बच्चा नफरत या प्यार की भाषा तुरंत समझ जाएगा। आजकल की शिक्षा ऊपर से थोपी हुई है। यदि शिक्षक का दिल बोलता है, तो शिक्षा छात्र के घर तक पहुंच जाएगी। एक शिक्षक अपने व्यक्तिगत उदाहरण से अपने विद्यार्थियों का जीवन बदल सकता है। पुराने समय में आश्रम शिक्षा आदर्श शिक्षा थी। आश्रमों में छात्र और शिक्षक एक साथ रहते थे। अध्यापक अपनी वेशभूषा, खान–पान और आदतों में सरल थे। जो छात्र अपने शिक्षकों का अनुसरण करते थे, वे सादा जीवन और उच्च विचार के उच्च आदर्श का भी पालन करते थे।

जैन दर्शन निम्नलिखित आठ गुणों पर जोर देता है जो विद्यार्थियों को सच्ची शिक्षा प्राप्त करने में बहुत मददगार होते हैं:

1. उसे हर समय हंसना नहीं चाहिए और दृढ़ता के साथ ज्ञान ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए।
2. उसे अपनी वासनाओं और इंद्रियों पर नियंत्रण रखना चाहिए और अपना मन पढ़ाई में लगाना चाहिए।
3. उसका चरित्र अच्छा होना चाहिए।
4. उसे अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए जो चरित्र पर असर डाले।
5. उसे अपने व्यवहार में निष्पक्ष होना चाहिए।

6. उसे चापलूसी के प्रति संवेदनशील नहीं होना चाहिए।
7. उसे आपा नहीं खोना चाहिए.
8. उसे सत्य का प्रबल अनुयायी होना चाहिए।

निष्कर्ष

जैन धर्म काफी अच्छा दर्शन है और शिक्षा के स्थायी लक्ष्य प्रदान करता है। जैन धर्म न केवल सांसारिक आनंद और स्वर्गीय सुख प्राप्त करने का एक वास्तविक स्रोत है, बल्कि पूर्णता, सर्वज्ञता और शाश्वत अनंत खुशी प्राप्त करने के लिए सांसारिक आत्मा को शुद्ध करने का विज्ञान है। यह न केवल मानव जाति की, बल्कि पक्षियों और श्रेष्ठों की भी मौलिक, स्वतंत्र, वैज्ञानिक, तर्कसंगत लोकतांत्रिक, सार्वभौमिक, व्यवस्थित और आदिम आस्था है। यह स्वतंत्रता, शुद्ध आनंद, आत्म–जिम्मेदारी,आत्म–बोध, सभी समानता स्वैच्छिक, सहयोग, पारस्परिक सहायता, आध्यात्मिक उन्नति, सभी को अच्छे विचार, मधुर स्वभाव, सादा जीवन, शुद्ध भोजन, संतोष, अंतर्राष्ट्रीय शांति, अनुकरणीय कार्रवाई प्रदान करता है। बहादुर आचरण. यह सभी का यहां तक कि सबसे पापी और नीच प्राणी का भी घनिष्ठ मित्र है, लेकिन अन्याय, बुराई, अज्ञान, इच्छाओं, जुनून और अशुद्धता का दुश्मन है। यह जन्म, जाति, वर्ग और से ऊपर उठकर सार्वभौमिक शिक्षा का समर्थन करता है इसलिए कहा जा सकता है जैन धर्म और शिक्षा में इसका दार्शनिक प्रभाव स्पस्ट रूप से परिलक्षित होता है।

सन्दर्भ सूची

1. चंद्र कैलाश, *जैन धर्म.* मथुरा, भारतीय दिगंबर जैन संघ चौरासी, 1965।
2. चंद्र कैलाश, *जैन साहित्य का इतिहास,* कांशी, गणेश प्रसाद वर्णी जैन ग्रंथमाला, 1965।
3. चंद्र जगदीश, *जैन साहित्य का वृहद् इतिहास,* वाराणसी, पाशर्वनाथ विधाश्रम शोध संस्थान, 1966।
4. जैन जगदीश चंद्र, *जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज,* वाराणसी, चौखम्भा विद्या भवन, 1985।
5. जैन हीरा लाल, *भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान,* मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद्, 1962।
6. मेहता मोहन लाल, *जैन दर्शन,* पाशर्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1972।

****